प्रकार से एक हेक्टेयर खेत मा 40–45 हजार पौधा अंदाजन जरूरी रथे। ये दुरिया ल भुमि के उपाजाऊपना अऊ सिंचाई के तरिका के हिसाब से घटा–बड़ा सकथन।

सिंचाई–घीकुँवारी के खेती के खातिर सिंचाई नहि के बरोबर जरूरी रथे। जैसन–जैसन जरूरी रथे ओमे थोड़े–थोड़े पानी देथन। ऐखर (घींकुँवार)के रूपाई ल गर्मी महिना मा करथन त पानी देहे बर लागथे।

निंदाई–गुडाई – रूपाई के एक महिना बाद मा निदाई –गुड़ाई कर सकथन जेखर से खरपतवार हर फसल के बाड़े मा अलगे प्रभाव नि डाले। येखर बाद मा जरूरत के अनुसार मा निंदाई –गुड़ाई ल करथन।

बिमारी अऊ ओखर रोके के तरिका – अक्सर येखर ऊपर कुछु कीरा के प्रकोप ल देखथन ओ बेरा मा मेानोक्रोटोफोस ल छिड़कन देथन। अक्सर येखर फसल ल कोई जानवरमन नि खाये लेकिन जानवरमन के घड़ी–घड़ी आवथ रहे ले घलो येखर पान मन टूट जाथे जेखर से फसल ल नुकसान होथे।

दोहन अऊ ओला इकट्ठा करथन– एक बरस मा कम से कम अऊ 15 महिना के उमर के पौधा काटे के खातिर पक्का हो जाथे। पौधा ल लगाये के एक बरस के बाद मा हर तीन महिना बाद पौधा के 3–4 पान ल छोड़के सब्बो पौधा के बाकी बॉचे पक्का पान ल बड़धार वाला हॅसिया से काटके इकट्ठा कर लेथन।पान ल इकटठा अऊ राखे के बिवस्था करत समय येखर बिशेस धियान ल रखथन कि पौधा के पान ल कम से कम नुकसान झन होवे।

उत्पादन अऊ उपज – घीकुँवारी के खेती ल करके जम्मों बरस भर मा 450–500 क्विंटल मांसवाला ताजा पान हर हेक्टेयर अंदाजन मानके दर से पा लेथन।

बाजार मूल्य– घीकुँवार के पान के बाजार मूल्य मा समय–समय मा घटते – बाड़त रथे। अभिहाल मा बाजार मा ऐखर मूल्य हर 3–6 रू. प्रति किलो तक हावे। घींकुँवार के खेती मा जोन किसान मन रूचि राखथे ओहर येखर बॉटके के बिवस्था के घलो जानकारी ल लेथें। यदि येखर बॉटे के बिवस्था खेती करके जगह ले बड़ दुरिया मा हावे त येखर खेती पान के आवाजाहि मा कठिन हो जाथे अऊ खर्चा घलो बड़कन होथे, किसान मन ल अपनमन के फसल के सही दाम घलो नि मिल पाये। घीकुँवार के एक हेक्टेयर मा खेती मा 45,000 का खर्चा अंदाजन अऊ आमदनी हर रू.1,50,000 तके होथे। ये प्रकार से किसान मन रू.1,00,000 अंदाजन प्रति हेक्टेयर उठा सकथें।

अनुवादक

आनन्द कुमार दास, आलोक कुमार थवाईत,
कु. रंजीता पटेल, श्रीमती शशिकिरण बर्वे

अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें

निदेशक

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

पो.आ.– आर.एफ.आर.सी.,
मण्डला रोड, जबलपुर– 482021
फोनः 0761–2840483, 4044002

वन विस्तार प्रभाग

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

पो.आ.– आर.एफ.आर.सी.,
मण्डला रोड, जबलपुर– 482021
फोनः 0761–2840627

Amrit Offset # 2413943

घृत कुमारी (घी कुंवर)

Aloe vera

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद)

डाकघर – आर.एफ.आर.सी., मण्डला रोड,
जबलपुर – 482 021 (म.प्र.)

घृत कुमारी (घी कुंवर)

ये हा लिलिऐसी समुदाय के पौधा हावे। येखर वानस्पतिक नाम ऐलोवेरा हावे। ये हा उत्तरी अमेरिका अऊ स्पेन के पौधा हावे। येहर जम्मो संसार भर मा अऊ भारत घलो मा एलोय के नाम से जानथे। घी कुवंर हर एक अइसन पौधा हावय जेनहा थोरकुन पानी घलो मा जीथे। ये हा जम्मो भारत मा अपन से ही (प्राकृतिक) मिलथे। ये हा यूरोप, उत्तरी अमेरिका, स्पेन, थाइलैण्ड, चाइना, वेस्ट इंडीज अऊ भरत घलो मा पाय जाथे।

येहा संस्कृत भाषा मा घृतकुमारी, हिन्दी मां ग्वारपाठा, घी कुऑर, गुजराती मा कुंवारपाठा, बंगला मा घृतकुमारी, मराठी मा कोरफड, मलयालम मा कुमारी, कन्नड़ मा लोधीसर अऊ अंग्रेजी मा एलोवेरा आदि कई ठन भाषा मा लोग मन मा प्रचलित हावे।

येहा एक ठन बड़के बरस के गुदासमेत 1–3 फूट ऊच्चा, भाला असन काटासमेत, धारदार पान समेत होथे। ऐखर गुदावाले पान के भीतर घी जइसन हरदी रंग के रसा जइसन भरे रथे। ऐखर बड़े उमर मा थोर कुन पर्‌री हरदी अऊ नारंगी रंग के फूल मांग–फागून (जनवरी–फरवरी) महिना मा निकलथे अऊ ऐमा लाली–हरदी रंग के फलीसमेत गंदले रथे।

दवाई के काम आथे:–

ये हर कडु बड़के जर जइसन रोग मा अऊ जले–कटे मा ठण्डक देथे। येखर से सजे–धजे के सामान बनाये जाथे। येखर पान के जेल के किरिम के जइसन काम आथे, चेहरा के चमड़ी साफ अऊ कोमल करथे अऊ कील मासा ठीक करे मा उपयोग होथे।

ऐखर पान मा अंदाजन 94% पानी पाये जाथे अऊ अमीनो एसीड अऊ कार्बोहाइड्रेट्स होथे। अऊ ऐमा एलोन नाम के ग्लूकोसाइड समूह बड़कनम मात्रा मा पाये जाथे। ऐखर मुख्य भाग बार्बेलाइन अथवा बारबोलिन नामके थोरकुन हरदी मा रंग केस्फटकीय ग्लूकोसाइड होथे। ऐखर साथ मा ऐमा आइसो बारबोलीन, एलोइमोटीन, गैलिक अम्ल, राल अऊ एक ठन सुगंधित तेल घलो पाये जाथे। ऐमा जोन तेल मौजूद होथे ओमे एक ठन विशेष गंध पाये जाथे। घी कुँवार के पान के रस अऊ गुदा (जेल) अऊ पौधा के जरी ल आगिमाध, आगि ले दागे, उदरशूल, कृमिहन, बरम स्भावकर, शोथहर, (रक्त शोधक) खून ल साफ करने वाला, महिलामन के बिमारी के उपचार मा काम मा लाथन। मुड़ पीरा, फोरा जसन घा, सूजन अऊ गाठों मा मोच आ जाथे अऊ अंदरूनी चोट, ऑखी रोग, खून के बहावबर, प्लीहा ल बड़ावेबर, बवासीर, खांसी के बिमारी मा बढ़िया दवाई बनाये के काम करथे।

हमर शरीर मा पौष्टिकता के प्रकिया के विकार के पुनर्स्थापन के खतिर येखर पान बढ़िया लाभ पहुँचाथे। मधुरस के संग येखर भुंजे पान के रस ल मिलाके येहर कई ठन प्रकार के खांसी अऊ कफ मा आराम देथे।

येखर पान से मिले (जेल) गूदा हर बच्चामन के अंतड़ी के कीरा/किरमी निकाले बर घरेलु दवाई बनाये के काम आथे। येखर गुदा के चमड़ी /शरीर के जले घामन अऊ पीरा के उपचार के घलो अचूक तरिका हावे। जले के घामन में ऐखर ताजा रस ठंडक समेत, स्निग्धता अऊ घा के चिन्हा ल तुरते हि मिटाये बर मदद करथे।

पहिले के समय से सलाद के रूपमा घलो काम मा आवथ हावे। जोनहर खाये के काम आवथ हावे जैसन– मठरी ,रोटी ,लाडू, हलुआ, शरबत, अर्क आदि मा काम आथे। ये खाना हर राजस्थान मा बड़ जियादा जाने जाथे।

खेती के तरीका –

भुँईया अऊ जलवायु – घीकुँवार के खेती करेके खातिर सिंचित अऊ असिंचित दूनो प्रकार के भुँईया काम मा आथे। लेकिन असिंचित भुँईया येखर के खेती बर बड़िया रथें। ग्वारपाठा के खेती बर बड़िया जलनिकासी वाला भुँईया हर ठीक माने जाथे। जोन भुँईया मा पानी भर जाथे ओमा पौधा के जरी के सरे के खतरा बने रथे। अऊर घीकुँवार के खेती बर कुछु जैविक सुरक्षा ,खातु अऊ कीरा के नाश करे वाला दवाई हर जरूरी नि रहे।

खेत कि तियारी – घीकुँवार के खेती के खातिर छॉटे खेत ल दू तीन बार गरू हल द्वारा जोतके तियार कर लेथन। येखर बाद मा जैसन जरूरी रथे ओखर अनुसार हर हेक्टेयर मा 8–10 क्विंटल गोबर के पक्का खातु मिलाके भुँईया ल तियार कर लेथन ।

प्रवर्धन– घीकुँवार के प्रवर्धन नान्हू–नान्हू कांदा अऊ बलबिल्स द्वारा करथन ये बलबिल्स ल घींकुँवार के खेती करत किसान मन/अनुसंधान करने वाला जगह से पाये जा सकथे।

रूपाई– घीकुँवारी के नान्हू पौधा के रूपाई पानी गिरे के महिना मा सावन–भादों (जुलाई–अगस्त) महिना मा लगाथन। नान्हू पौधा, बलबिल्स के रूपाई करत समय पंक्ति ल पंक्ति 30 से 45 से.मी. दुरिया रकथन अऊ पौधा ले पौधा तक के दुरिया 30 सें.मी. दुरिया रखथन। ये